झारखंड के राजनीतिक जनजागृति एवं झारखण्ड आंदोलन में जयपाल सिंह मुंडा की भूमिका : एक ऐतिहासिक अध्ययन

पीएच0 डी0 पंजीयन हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबंध का सार
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
(सामाजिक विज्ञान संकाय)
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय
धनबाद, झारखंड (भारत)

शोध निदेशक
डॉ कौशल कुमार
सह प्राध्यापक
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
(सामाजिक विज्ञान संकाय)
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय
धनबाद (झारखण्ड)

शोधार्थी
अविनाश कुमार
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग
डिग्री कॉलेज टुण्डी, धनबाद (झारखण्ड)
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय
धनबाद (झारखण्ड)

झारखण्ड के राजनीतिक जनजागृति एवं झारखण्ड आंदोलन में जयपाल सिंह मुंडा की भूमिका : एक ऐतिहासिक अध्ययन

❖ भूमिका :

मानव समाज परिवर्तनशील है। हर क्षण हमारे आस–पास के तथ्यों एवं परिघटनाओं में निरंतर परिवर्तन हो रहा है। परिवर्तनशील समाज में विभिन्न परिस्थितियों के कारण चुनौतियां एवं समस्याएं भी जन्म लेती है। मानव सामाज अपने अलग–अलग कालखंड में विभिन्न परिस्थितियों में उपजी समस्याओं के समाधान के लिए हमेशा ऐसे लोगों को जन्म लेने का अवसर प्रदान किया है। जिसके प्रभावों से मानव समाज में क्रांतिकारी बदलावों का सृजन हुआ है। महान व्यक्तित्व के अध्ययन करने वाले इतिहासकारों का यह भी मानना है कि इतिहास वास्तव में महान व्यक्तियों के प्रभावों का अध्ययन है, जिसका व्यापक असर समाज की दशा एवं दिशा पर पड़ा है। जैसे कार्लाइल (1841, पृष्ठ , 2)[1] ने कहा कि '' दि हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड इज बट द बायोग्राफी ऑफ ग्रेट मैन'' इतिहास के संदर्भ में कार्लाइल का यह विश्वास दर्शाता है कि नायक अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं और दिव्य प्रेरणा दोनों के माध्यम से इतिहास को आकार देते हैं। कार्लाइल ने अपनी पुस्तक 'हीरोज एंड हीरो–पूजा' में इतिहास को ''नायको'' के निर्णयों, कार्यों, विचारों और पात्रों को चालू करने के रूप में देखा। भारत लगभग 200 वर्षों तक अग्रेजी साम्राज्यवाद के अधीन रहा यह काल इतिहास के दृष्टिकोण से भारत के परिप्रेक्ष्य में इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आधुनिक एवं स्वतंत्र भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक आकाँक्षाओं के निर्माण में इसका सबसे बड़ा योगदान रहा है। यह आधुनिक भारत एवं स्वतंत्र भारत के वैचारिक विकास का समय था जहाँ एक ओर लोगों ने भारत को आजाद कराने के लिए संघर्ष किया तो दूसरी तरफ भारतीय समाज के विसंगतियों को दूर करने के लिए महात्मा गाँधी की सत्य एवं अहिंसा पर आधारित दर्शन , सरदार बल्लभभाई पटेल के अखंड भारत का निर्माण का, पंडित जवाहर लाल नेहरु का समाजवाद, स्वामि विवेकानंद का वैदिक जीवन दर्शन, डॉ अंम्बेडकर की समाजिक न्याय की अवधारणा आदि इतने प्रभावशाली हैं कि आज के आधुनिक भारत के वैचारिक एवं व्यावहारिक विशेषताओं में इनके विचारों की प्रभावशाली उपस्थिति देखी जा सकती है ।

वर्तमान झारखण्ड राज्य के जनजातीय समुदाय से संबंध रखने वाले, मारंग गोमके की उपाधि प्राप्त 'जयपाल सिंह मुंडा' का जीवन यात्रा भारतीय समाज के उन सुनहरे विरासतों में एक है, जिससे पुरे विश्व का समाज पीढ़ियों तक लाभान्वित होता रहेगा। जयपाल सिंह मुंडा भारतीय आदिवासियों और झारखंड आंदोलन के एक सर्वोच्च नेता थे। यह शोध झारखण्ड में राजनीतिक जनजागृति एवं झारखण्ड आंदोलन में जयपाल सिंह मुंडा की भूमिका का ऐतिहासिक अन्वेषण के साथ–साथ वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता की समीक्षा भी प्रस्तुत करेगा। यह एक ऐतिहासिक

शोध होगा जिसकी प्रकृति विश्लेषात्मक होगी। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के दस्तावेजों को उपयोग किया जाएगा। अध्ययन से संबंधित प्राथमिक सूचनाएं जयपाल सिंह मुंडा के द्वारा स्वयं लिखी गई पुस्तकों, प्रकाशित लेखों एवं विचारों से प्राप्त किए जाएंगे। वहीं, विभिन्न प्रकार की द्वितीयक सूचनाएं जयपाल सिंह मुंडा पर किए गए शोधकार्य, शोधपत्रों, विभिन्न पत्र – पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेखों एवं समाचार पत्रों में प्रकाशित उनके संदर्भ से प्राप्त किए जाएंगे। यह शोध ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्व का है, इसके पीछे दो मत्वपूर्ण कारण है –(1) ऐतिहासिक रूप से जयपाल सिंह मुंडा पर काम तो हुए है किंतु सामजिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में कम काम हुए है। (2) जनजातीय समुदाय आज भी सामाजिक–आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है साथ ही बहुआयामी शोषण का शिकार है ऐसे में उक्त परिप्रेक्ष्य में जयपाल सिंह मुंडा के विचारों एवं कार्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समीक्षा अत्यंत उपयोगी होगा ।

❖ साहित्य की समीक्षाः

- **कार्लाइल, थॉमस (1841)**[2] स्कॉटिश दार्शनिक और निबंधकार थॉमस कार्लाइल जिन्होंने 1840 में वीरता पर व्याख्यान की एक श्रृंखला दी थी, जिसे बाद में 'ऑन हीरोज, हीरो–पूजा और द हीरोइक इन हिस्ट्री' के रूप में जेम्स फ्रेजर, लंदन (1841) के द्वारा प्रकाशित किया गया। कार्लाइल का मानना है कि इतिहास काफी हद तक महान पुरुषों, या उनके प्रभाव से समझाया जा सकता है। नायको, अत्यधिक प्रभावशाली और अद्वितीय व्यक्ति, जो अपनी प्राकृतिक विशेषताओं, जैसे कि श्रेष्ठ बुद्धि, वीर साहस, असाधारण नेतृत्व क्षमता या दैवीय प्रेरणा के कारण, एक निर्णायक ऐतिहासिक प्रभाव रखते हैं। कार्लाइल ने कहा कि ''दुनिया का इतिहास महापुरुषों की जीवनी है'', उनके विश्वास को दर्शाता है कि नायक अपने व्यक्तिगत गुणों और दिव्य प्रेरणा दोनों के माध्यम से इतिहास को आकार देते हैं।

- **सेगल, रॉबर्ट ए. (2000)**[3] ने अपने शोध कार्य, 'हीरो मिथ्स', में लिखा है कि कार्लाइल के महान व्यक्ति सिद्धांत के निर्माण के सबसे प्रबल आलोचकों में से एक हर्बर्ट स्पेंसर थे ,जो मानते थे कि ऐतिहासिक घटनाओं को व्यक्तियों के निर्णयों के लिए जिम्मेदार ठहराना एक अवैज्ञानिक स्थिति थी। उनका मानना था कि कार्लाइल को ''महान पुरुष'' कहा जाने वाला पुरुष केवल उनके सामाजिक वातावरण के उत्पाद थे।

- **परमार, पूजा. (2019)**[4] ने अपने एक अध्ययन 'अनडोइंग हिस्टोरिकल रॉगसरू लॉ एंड इंडीजेनेटी इन इंडिया' में देश के ''मूल निवासियों'' के साथ किए गए ऐतिहासिक अन्याय को पूर्ववत करने के लिए भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा हाल ही में किए गए आह्वान पर एक करीबी नजर

के साथ शुरुआत करते हुए, आदिवासियों के सबसे मुखर प्रतिनिधि जयपाल सिंह मुंडा द्वारा किए गए न्याय की जांच करता है। दिसंबर 1946 और जनवरी 1950 के बीच भारत की संविधान सभा में, जब भारत के संविधान में पिछले अन्यायों को संबोधित करने की संभावनाओं और सीमाओं दोनों के संदर्भ में लिखे जाने की पृष्ठभूमि में आधुनिक उदार लोकतंत्रों में मूल निवासियों के रूप में वंचित लोगों द्वारा किए गए सुधारों पर लोगों का ध्यान खींचने की कोशिश किया है।

- **सेन, रोनजॉय(2009)**[5] ने अपने शोधपत्र 'डिवाइडेड लोयालिटी : जयपाल सिंह एंड हिज मेनी जर्नीस' में महान खिलाड़ी और ओलंपियन, जयपाल सिंह (1903–70) के राजनीतिक करियर की समीक्षा प्रस्तुत किया है। जयपाल सिंह मुंडा के जीवन और लेखन के माध्यम से लेखक ने औपनिवेशिक और स्वतंत्र भारत दोनों में पहचान, राष्ट्रवाद और लोकतंत्र के सवालों का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। लेखक इस बात की तरफ ध्यान खींचते है कि जयपाल के बारे में बहुत कम लिखा गया है –जो कभी झारखंड राज्य के आदिवासियों के मारंग गोमके (सर्वोच्च नेता) के रूप में प्रतिष्ठित थे – और वह आज भी एक बड़े पैमाने पर भुला दिए गए व्यक्ति हैं।
- **पंकज,ए.के.(2020)**[6] ने अपने महत्वपूर्ण कृति 'अदिवासिदोमः सिलेक्टेड राईटिंग्स एंड स्पीचेस ऑफ जयपाल सिंह मुंडा' जो प्रभात प्रकाशन से 2020 में प्रकाशित हुआ में जयपाल सिंह मुंडा के ऊपर शोध कार्य की कमी पर चिंता जताते हुए लिखा है कि – कौन थे जयपाल सिंह मुंडा? भारतीय स्वतंत्रता और एक नए भारत के निर्माण में उनका राजनीतिक–बौद्धिक योगदान क्या था? जयपाल और अन्य जनजातीय नेता जनजातीय समाज की किन आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व कर रहे थे? आजादी के सत्तर साल बाद भी इस पर इतिहास खामोश है। एक तरफ गांधी, नेहरू, जिन्ना, अम्बेडकर समेत कई स्वतंत्रता सेनानियों पर सैकड़ों किताबें, नाटक और फिल्में हैं, और अभी भी उन पर हर दिन कई नई किताबें आ रही हैं, लेकिन जयपाल सिंह मुंडा पर एक भी किताब नहीं है। अपने इस किताब में संपादक ने जयपाल सिंह मुंडा के कुछ महत्वपूर्ण लेखों एवं भाषणों का संकलन किया है।
- **कुल्लू, अजीत. (2022)**[7] ने अपने शोधपत्र 'जनजातीय इतिहास, संस्कृति एवं विकास और विस्थापन में पहचान' में वर्तमान जनजातीय समाज के समक्ष विस्थापन की समस्याओं को विकास के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया साथ ही ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जनजातीय समुदाय एवं संस्कृति की विशेषताओं को रेखांकित करने का प्रयास किया है।

- **विद्यार्थी, आई. पी. एवं राय,बी.के.(1985)**[8] ने 'द ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया' नामक अपने पुस्तक में भारत के जनजातीय संस्कृति की मूल तत्वों की व्याख्या की है। साथ ही मौजूदा समय में इनके समक्ष जो चुनौतियां हैं इसपर एक अंतर्दृष्टि रखने का प्रयास किया है।

- **किरो,संतोष(2018)**[9] ने 'द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ जयपाल सिंह मुंडा' में जयपाल सिंह मुंडा के समय की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में उनके जीवन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है।

- **कुमार, राकेश. (2022)**[10] ने अपने एक अध्ययन सोसाइटी एंड कल्चर चेंज इन द ट्राइबल पीपल ऑफ झारखण्ड में ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में झारखण्ड के जनजातीय समुदाय के सामाजिक – सांस्कृतिक परिवर्तनों के संदर्भ विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

- **बिरोत्तम.बी.(2017)**[11] ने अपने एक महत्वपूर्ण कृति 'झारखण्डः इतिहास एवं संस्कृति' में झारखण्ड का इतिहास एवं संस्कृति के संदर्भ में विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत किया है इसमें जयपाल सिंह मुंडा के कार्यों एवं विचारों का भी उल्लेख मिलता है।

❖ शोध समस्या का अन्वेषण :

- जनजातीय समाज से संम्बध रखने वाले महान व्यक्तित्व जयपाल सिंह मुंडा जिन्होनें विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त की। इनकी जीवन यात्रा भारतीय समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत है । जयपाल सिंह मुण्डा के जीवन संघर्ष की गाथा के विशिष्ट पहलुओं को शोध के माध्यम से प्रदर्षित करना है।
- आदिवासियों के जीवन दर्शन 'आदिवासियत' तथा उनकी समाजिक मान्यताओं , संस्कृति का जयपाल सिंह मुंडा के जीवन दर्शन एवं समाजिक विचारों पर प्रभाव के महत्वपूर्ण बिंदुओं को शोध के माध्यम से दर्शाना है।
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान झारखण्ड के आदिवासियों के द्वारा अपने अधिकार के लिए किए गये संघर्ष,जो उनकी राजनितिक चेतना को प्रर्दषित करती है। जयपाल सिंह मुण्डा के समय झारखण्ड में राजनीतिक चेतना की स्थिति का के माध्यम से अवलोकन करना है।
- झारखण्ड के आदिवासी समुदाय के द्वारा गठित राजनीतिक संगठन 'आदिवासी महासभा' से जयपाल सिंह मुण्डा के जुड़ने के बाद 1938 ई0 – 1970 ई0 तक झारखण्ड के राजनीतिक जनजागृति हेतू , इनके द्वारा अनेकों प्रयास किये गये । भारत के आदिवासी के अधिकार हेतू संविधान सभा के समक्ष जयपाल सिंह मुण्डा द्वारा किये गये प्रयासों को शोध के माध्यम से प्रदर्षित करना है।
- झारखण्ड के आदिवासियों ,मूलवासियों, के अधिकारों को सुरक्षा प्रदान करने ,झारखण्ड के विकास एवं झारखंडी संस्कृति को बचाने के लिए झारखण्ड राज्य की मांग के लिए झारखण्ड आंदोलन में

जयपाल सिंह मुण्डा की भूमिका को शोध के माध्यम से प्रदर्षित करना है। साथ ही जयपाल सिंह मुण्डा का वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का शोध के माध्यम से अन्वेषण करना है।

शोध कार्य का उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित प्रमुख उद्धेश्य हैं –

- प्रस्तावित शोध में जयपाल सिंह मुंडा की जीवनी एवं इनके जीवन के प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं की जांच किया जाएगा।
- प्रस्तावित शोध में जयपाल सिंह मुंडा के जीवन दर्शन तथा राजनीतिक एवं सामाजिक विषयक विचारों की जाँच किया जाएगा ।
- जयपाल सिंह मुंडा के समकालीन झारखण्ड प्रदेश में राजनीतिक चेतना की स्थिति का अध्ययन।
- जयपाल सिंह मुंडा के झारखण्ड में राजनीतिक जनजागृति के उत्थान हेतु किए गए प्रयासों की अध्ययन करना।
- जयपाल सिंह मुंडा के द्वारा झारखण्ड आंदोलन में किए गए प्रयासों का अध्ययन करना।
- जयपाल सिंह मुंडा के योगदानों का वतर्मान संदर्भ में प्रासंगिकता अध्ययन करना।

❖ **शोध प्रश्नः**

प्रस्तावित शोध निम्नलिखित प्रमुख शोध प्रश्न होंगें –

- जयपाल सिंह मुंडा के जीवन का क्या इतिहास है ?
- जयपाल सिंह मुंडा का जीवन दर्शन तथा राजनीतिक एवं सामाजिक विषयक विचार क्या हैं ?
- जयपाल सिंह मुंडा के समकालीन झारखण्ड प्रदेश में राजनीतिक चेतना की स्थिति किस प्रकार थी?
- जयपाल सिंह मुंडा का झारखण्ड में राजनीतिक जनजागृति के उत्थान में क्या भूमिका है?
- जयपाल सिंह मुंडा का झारखण्ड आंदोलन में क्या भूमिका रही है ?
- जयपाल सिंह मुंडा के जीवन, जीवन दर्शन, झारखण्ड में राजनीतिक जनजागृति एवं झारखण्ड आंदोलन में इनके योगदानों का वतर्मान संदर्भ में क्या प्रासंगिकता है ?

❖ **अध्याय क्रम योजनाः**

प्रस्तावित शोध में कुल पांच अध्याय होंगे –

भूमिका

- अध्याय – **I** जयपाल सिंह मुंडा की जीवनी
- अध्याय – **II** समकालीन झारखण्ड प्रदेश में राजनीतिक स्थिति एवं झारखण्ड आंदोलन में जयपाल सिंह मुंडा की भूमिका
- अध्याय – **III** जयपाल सिंह मुंडा के राजनीतिक एवं सामाजिक विषयक विचार
- अध्याय – **IV** झारखण्ड की राजनीतिक चेतना में जयपाल सिंह मुंडा का योगदान
- अध्याय – **V** जयपाल सिंह मुंडा के योगदानों का वतर्मान संदर्भ में प्रासंगिकता

उपसंहार

❖ शोध प्रविधि–

यह एक ऐतिहासिक शोध है, इसकी शोध पद्धति ऐतिहासिक ,विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक के साथ साथ वर्णनात्मक है। प्रस्तुत शोध में दो तरह की सूचनाएं उपयोग में लायी जाएगी। प्राथमिक प्रकार की सूचनाएं जयपाल सिंह मुंडा के स्वयं के लेखों एवं भाषणों से लिया जायेगा। जो उनके भारत सरकार के सुचना प्रसार मंत्रालय के द्वारा प्रकाशित है। इसके आलावे जयपाल सिंह मुंडा के जन्म स्थान एवं उनके स्मृति में बनाए गए संग्रहालयों से भी सूचनाएं प्राप्त की जाएग। द्वितीयक प्रकार की सूचनाएं अन्य लेखकों के आलेख, शोधकर्ताओं के शोधपत्र, समाचार पत्रों में प्रकाशित जयपाल सिंह मुंडा के विचारों पर आलेख आदि से प्राप्त किए जाएंगे। द्वितीयक आंकड़े प्राप्त करने के स्त्रोत –समाचारपत्रों में उनपर छपे लेख, पत्रिकाओं में उनपर छपे लेख एवं समीक्षा, उनपर लिखी गई किताबें आदि होगी।

❖ प्रस्तावित शोध कार्य की प्रासंगिकता :

ऐतिहासिक रूप से जयपाल सिंह मुंडा पर काम तो हुए है किंतु और भी कार्य किए जाने की आवश्यकता है। प्रस्तावित शोध में जयपाल सिंह मुंडा की जीवनी, जयपाल सिंह मुंडा के जीवन दर्शन एवं राजनीतिक एवं सामाजिक विषयक विचारों, समकालीन झारखण्ड प्रदेश में राजनीतिक चेतना की स्थिति, जयपाल सिंह मुंडा के झारखण्ड में राजनीतिक जनजागृति के उत्थान हेतु किए गए प्रयास, झारखण्ड आंदोलन में इनकी भूमिका का अध्ययन एवं वतर्मान संदर्भ में प्रासंगिकता का अन्वेषण किया जाएगा। जो ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यंत प्रासंगिक है।

❖ शोध सीमांकन एवं भविष्यगत कार्य :

भविष्य में शोधकर्ता जयपाल सिंह मुंडा के बहुपक्षीय योगदानों परिप्रेक्ष्य में अलग–अलग शोधकार्य कर सकते हैं। जैसे–जयपाल सिंह मुंडा का जनजातीय समाज के उत्थान में योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन, इसी प्रकार जयपाल सिंह मुंडा के सामाजिक विचारों का अन्य समकालीन समाज सुधारों के साथ जोड़कर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। इसी प्रकार जयपाल सिंह मुंडा के राजनीतिक दर्शन का समकालीन भारतीय राजनीति व झारखण्ड के जनजातीय राजनीतिक चेतना पर ऐतिहासिक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ सूची–

1. कार्लाइल, थॉमस (1841), *''लेक्चर 1:हीरो इन फॉर्म ऑफ देविनिटी''* ओडिन पगानिस्म : स्कैंडिनेवियाई मायथोलॉजि. ऑन हीरोज, हीरो–वरशिप, एंड द हीरोइक इन हिस्ट्री : सिक्स लेक्चर्स। लंदनः जेम्स फ्रेजर. पृष्ठ संख्या– 1–2.
2. *वही, पृष्ठ संख्या*– 1–2.
3. . सेगल, रॉबर्ट ए. (2000), *"हीरो मिथ्स"* , विले–ब्लैकवेल, पृष्ठ संख्या– 3.
4. परमार, पूजा. (2019). *"अनडोइंग हिस्टोरिकल रॉगसः लॉ एंड इंडी जेनेटी इन इंडिया"* ऑसगूड हॉल लॉ जर्नल, वॉल्यूम – 49, पृष्ठ संख्या– 491.
5. सेन, रोनोजॉय(2009), *"डिवाइडेड लोयालिटीः जयपाल सिंह एंड हिज मेनी जर्नीस. स्पोर्ट इन सोसाइटी"*, वॉल्यूम–12, पृष्ठ संख्या– 765–775.
6. पंकज,ए.के.(2020), "अदिवासिदोमः सिलेक्टेड राईटिंग्स एंड स्पीचेस ऑफ जयपाल सिंह मुंडा", प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–20–22.
7. किरो,संतोष(2018), "द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ जयपाल सिंह मुंडा" प्रभात प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या–05
8. कुल्लू, अजीत 2022), *"जनजातीय इतिहास, संस्कृति और विकास और विस्थापन में पहचान*, दिनांक 10 सितंबर 2023 को प्राप्त।
9. विद्यार्थी, आई. पी. एवं राय,बी.के.(1985), *"द ट्राइबल कल्चरऑफ इंडिया"* कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ संख्या–5–6
10. कुमार, राकेश. (2022), "सोसाइटी एंड कल्चर चेंज इन द ट्राइबल पीपल ऑफ झारखण्ड" वॉल्यूम – 2, पृष्ठ संख्या– 73–77.
11. बरोत्तम.बी.(2017), *"झारखण्ड इतिहास एवं संस्कृति"* , बिहार ग्रंथ अकादमी पृष्ठ संख्या– 04.

****